एकेटीयू: ईजी होगी दाखिला प्रक्रिया

- प्राइवेट कॉलेजों का आवेदन प्रक्रिया जल्दी शुरू करने का प्रस्ताव
- प्रदेश के बाहर बड़े पैमाने पर प्रवेश परीक्षा केंद्र बनाने की मांग

NODIA (22 Nov, JNN): डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) प्रदेश के इंजीनियरिंग और प्रबंधन कॉलेजों में दाखिले की प्रक्रिया को सरल बनाएगा. पिछले तीन सालों से कॉलेजों की आधी से अधिक सीटें खाली रह जा रही हैं. सीटों को भरने के लिए विश्वविद्यालय में अभी से मंथन शुरू हो गया है.

समिति की पहली बैठक

एकेटीयू द्वारा दाखिला प्रक्रिया में सुधार के लिए गठित परामर्शदात्री समिति की पहली बैठक में प्राइवेट कॉलेजों के प्रतिनिधियों ने खाली सीटों का मुद्दा जोर-शोर से उठाया. प्रस्ताव रखा कि इस बार राज्य प्रवेश परीक्षा (यूपीएसइइ) की आवेदन प्रक्रिया जल्दी शुरू कर दी जाए. ताकि छात्रों को फॉर्म भरने के लिए अधिक समय मिल पाए. प्रवेश परीक्षा भी मई के पहले सप्ताह में करा ली जाए और जून के पहले सप्ताह तक परीक्षा परिणाम जारी कर दिया जाए. कॉलेजों ने प्रस्ताव रखा है कि विश्वविद्यालय मुख्य काउंसलिंग को 10 से 18 जुलाई तक पूरा कर ले और बची सीटों का विवरण जारी कर दे. उसके बाद कॉलेज पांच से 10 अगस्त तक सीधे दाखिले की प्रक्रिया पूरी कर लें. इसके अलावा प्रदेश के बाहर अन्य प्रमुख शहरों में परीक्षा केंद्र बनाने का प्रस्ताव भी दिया है. अभी तक एकेटीयू प्रदेश के बाहर कुछ चुनिंदा शहरों में ही परीक्षा केंद्र बनाता रहा है. परामर्शदात्री समिति की बैठक में आए प्रस्तावों को अब कैब (केंद्रीय प्रवेश समिति) की बैठक में रखा जाएगा. चर्चा के बाद प्रस्तावों पर अंतिम मुहर लगेगी.

बाहरी छात्रों को मिलेगा मौका

एकेटीयू में अभी उन्हीं छात्रों को दाखिला मिलता है जो प्रदेश के मूल निवासी हैं. पिछले सत्र में भी प्राइवेट कॉलेजों ने डोमिसाइल की बाध्यता को खत्म करने की जोर-शोर से मांग की थी. उसके बाद विश्वविद्यालय ने प्रदेश सरकार को इसके लिए प्रस्ताव भी भेजने की प्रक्रिया शुरू की थी, लेकिन कोई फैसला नहीं हो पाया. सूत्रों का कहना है कि इस बार एकेटीयू का दरवाजा बाहरी छात्रों के लिए खुल सकता है. विवि ने अभी से इसकी तैयारी शुरू कर दी है. एकेटीयू से संबद्ध इंजीनियरिंग और प्रबंधन कॉलेजों में पिछले तीन वर्षों से छात्रों का अकाल है. इस सत्र में भी खासकर प्राइवेट कॉलेजों में आधी से अधिक सीटें खाली रह गई. सबसे बुरी स्थिति एमबीए और एमसीए कोर्स की है.